(आगामी कार्यक्रम...)

जयपुर पंचकल्याणक का द्वितीय वार्षिक महोत्सव एवं महामस्तकाभिषेक

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया था; उस महामहोत्सव की यादें सभी को पुन: ताजा हो जावें, इस हेतु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का **द्वितीय वार्षिक महोत्सव दिनांक 28 फरवरी से 2 मार्च 2014 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में विशिष्ट विद्वानों का प्रवचन, प्रौढ कक्षा व गोष्ठियों के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा।

इसके अतिरिक्त श्री रत्नत्रय विधान, जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया जायेगा।

इस मंगल महोत्सव में पधारने हेतु आप सभी को

हार्दिक आमंत्रण है।

विशेष अनुरोध : आप कब, किस साधन से, कितने लोग जयपुर पधार रहे हैं, इसकी पूर्व सूचना अवश्य भेजें, ताकि आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 32 (वीर नि. संवत् - 2540) 367 अंक : 7

नहिं गोरो नहिं कारो...

नहिं गोरो नहिं कारो चेतन, अपनो रूप निहारो रे।।टेक।।
दर्शन ज्ञान मई चिन्मूरत, सकल करम ते न्यारो रे।।
नहिं गोरो नहिं कारो... ।।1।।
जाके बिन पहिचान जगतमें, सह्यो महा दुख भारो रे।
जाके लखे उदय हो तत्क्षण, केवल ज्ञान उजारो रे।।
नहिं गोरो नहिं कारो... ।।2।।
कर्म जनित पर्याय पायके, कीनों तहाँ पसारो रे।
आपा परको रूप न जान्यो, तातैं भव उरझारो रे।।
नहिं गोरो नहिं कारो... ।।3।।
अब निजमें निजकूं अवलोकूं, जो हो भव सुलझारो रे।
'जगतराम' सब विधि सुख सागर, पद पाऊँ अविकारो रे।।
नहिं गोरो नहिं कारो... ।।4।।

- कविवर पण्डित जगतरामजी

छहढाला प्रवचन

सम्यक्त्व धारक जीव की अंतरंग दशा और उसकी महिमा

दोषरहित गुणसहित सुधी जे, सम्यग्दरश सजै हैं।
चरितमोहवश लेश न संजम पै सुरनाथ जजै हैं।।
गेही, पै गृह में न रचैं ज्यों, जलतैं भिन्न कमल है।
नगरनारि को प्यार यथा, कादे में हेम अमल है।।१५।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

श्री कुन्दकुन्दस्वामी जैसे वीतरागी सन्त भी अष्टप्राभृत में कहते हैं कि -

वे धन्य हैं सुकृतार्थ हैं वे शूर नर पण्डित वही।
दु:स्वप्न में सम्यक्त्व को जिनने मलीन किया नहीं।।

सम्यग्दृष्टि कदाचित् चाण्डाल के देह में रहा हो तो भी वह देव जैसा है - यह बात श्री समन्तभद्रस्वामी ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में की है -

सम्यग्दर्शनसम्पन्नम् अपि मातंगदेहजम्।
देवा देवं विदुर्भस्म गुढांगारान्तरौजसम्।।२८।।

चाण्डाल शरीर में उपजने वाला सम्यग्दृष्टि जीव को गणधरदेव 'देव' कहते हैं; भस्म से ढके अंगार की तरह वे जीव सम्यक्त्व से शोभते हैं। सम्यग्दृष्टि तिर्यंचपर्याय या स्त्रीपर्याय में हो तो भी सम्यक्त्व के प्रताप से वह प्रशंसनीय है। तिर्यंच पर्याय या स्त्रीपर्याय लोक में सामान्यत: निंदनीय होती है; परन्तु सम्यग्दर्शन सहित होने पर वह प्रशंसनीय है। भगवती-आराधना में भी सम्यग्दृष्टि स्त्री की बहुत प्रशंसा की है।

गृहस्थ सम्यग्दृष्टि स्त्री हो, पुत्रादि सहित भी हो; फिर भी वह गृह में नहीं रमती, उसकी रुचि आत्मा में है। जिनको आत्मा से भिन्न जान लिया, उनकी रुचि कैसे रहे ? उसने स्वानुभव द्वारा स्व-पर का विभाग कर निर्णय किया है कि मैं ज्ञानानंदस्वरूप ही हूँ और शुद्धात्मा के विकल्प से लेकर सारी दुनिया अब मुझसे भिन्न है - ऐसी भेदज्ञान की दृष्टि की अपार महिमा है, उसका अपार सामर्थ्य है। उसने अपनी अंतर

की परिणमन धारा में आनंदमय स्वघर देखा है, वह राग को परघर समझकर उसमें जाना नहीं चाहती; चित्त चैतन्यधाम में लगा है, वहाँ से हटता नहीं और जहाँ से जुदा हुआ, वहाँ जाना नहीं चाहती।

आठ वर्ष की छोटी बेटी के सम्यग्दर्शन का ज्ञान उसके माता-पिता को हो तो वे भी कहते हैं कि वाह बेटी ! धन्य है तेरा अवतार ! तूने आत्मा का काम करके जीवन सफल किया। आत्मा में सम्यक्त्व-दीपक प्रगटाकर तूने मोक्षपथ पा लिया। उम्र भले छोटी हो; किन्तु जिसने आत्मा को साध लिया, वह सराहनीय है, देव भी उसकी प्रशंसा करते हैं।

सम्यग्दृष्टि जीव परभावों से एवं संयोगों से अलिप्त रहता है; बाह्य में विशेष त्याग भले न हो, असंयमी हो, गृहवास में स्त्री-पुत्रादि के साथ रहता हो तो भी अंतर की दृष्टि में वह कितना अलिप्त है ? यह बात यहाँ तीन दृष्टान्त से समझायी गयी है -

(१) जल के बीच कमल की तरह वह अलिप्त है। समयसार की १४वीं गाथा में भी आत्मा का अलिप्त (अबद्ध-अस्पृष्ट) स्वभाव दिखाने के लिए यह दृष्टान्त दिया है। जैसे कमलपत्र पानी के बीच रहा दिखता है, परन्तु उसका अलिप्त स्वभाव देखो तो वह पानी से छुआ ही नहीं; वैसे धर्मात्मा संयोग और रागरूपी कादव के बीच रहा दीखे, परन्तु उसके ज्ञानभाव को देखो तो वह परभाव से अलिप्त है। ज्ञान तो राग से भिन्न ही है, वह ज्ञान परभावों से लिप्त नहीं होता। आत्मा का ज्ञान पर से भिन्न है; जिनको अपने से भिन्न जाना, उनमें आत्मबुद्धि कैसे हो ? और जिसका अपने स्वरूप से अनुभव किया - ऐसी चैतन्यसत्ता का अस्तित्व कभी छूटता नहीं; उसकी दृष्टि, उसकी श्रद्धा कभी नहीं छूटती। इसप्रकार चैतन्यसत्ता के ऊपर जिसकी दृष्टि है, उसकी चेतना परभाव से कभी लिप्त नहीं होती, वह अपने ज्ञान को कभी परभावरूप अनुभव नहीं करता। उसे निरंतर भेदज्ञान है कि मेरे ज्ञान का एक अंश भी अन्यरूप नहीं हुआ है, ज्ञान परभाव के किसी भी अंश को नहीं छूता, अलिप्त ही रहता है। इसप्रकार सम्यग्दृष्टि गृहवास में हो तो भी जलकमलवत् अलिप्त ही है।

(२) जैसे सुवर्ण कीचड़ के बीच पड़ा हो तो भी उसे जंग नहीं लगती, सोने का स्वभाव ही जंग-रहित है; वैसे ही असंयमरूपी कीच में रहते हुए भी धर्मात्मा का सम्यग्दर्शन सोने जैसा शुद्ध है, वह मलिन नहीं होता। चैतन्यबिंब आत्मा जिस दृष्टि में आया, उस दृष्टि की शुद्धता में ऐसा सामर्थ्य है कि वह किसी भी परभाव को अपने में आने नहीं देती; रागादि परभाव होने पर भी श्रद्धा-ज्ञान तो सौटंची सोने जैसा शुद्ध वर्तता है; वे ज्ञान और विकल्प को अत्यन्त भिन्न ही रखते हैं। विकल्प का प्रवेश ज्ञान में नहीं होता, ज्ञान विकल्परूप नहीं होता। ऐसा ज्ञानवंत सम्यग्दृष्टि धर्मात्मा प्रशंसनीय है।

ऐसा कहा जाता है कि सम्यग्दृष्टि चलते हुए भी स्थिर है, बोलते हुए भी मौन है;

क्योंकि उन्होंने शरीर और वचन से अत्यंत भिन्न अपना चेतनस्वरूप जान लिया है, वे उसमें ही वर्तते हैं; अंतर की दृष्टि और ज्ञान तो निजभाव में स्थिर बैठे हैं, वे विकल्प या वाणी में नहीं जाते; इसलिए ज्ञानी तो स्थिर ही है। अहो, ज्ञानी की ऐसी अंतरंगदशा को कोई विरले ही पहचानते हैं। बाह्य दृष्टि से देखने वाले लोग ज्ञानी को नहीं पहचान सकते।

सम्यग्दृष्टि जीवडो करै कुटुंब प्रतिपाल।
अंतर से तो भिन्न है, ज्यों धाय खिलावे बाल।।

धाय माता बच्चे को पुत्र की तरह ही प्रेम करके सम्हालती है, खिलाती है, लालन-पालन करती है, 'पुत्र' कहकर बुलाती है, फिर भी अन्तर में उसको भान है कि इस पुत्र को जन्म देने वाली माता मैं नहीं हूँ, यह मेरा पुत्र नहीं है; वैसे ही धर्मात्मा शरीरादि की चेष्टा करता हुआ दिखने में आवे, 'यह मेरा घर' इत्यादि भाषा भी बोलता हो; परन्तु अन्तर की दृष्टि में उसे भान है कि मैं तो चैतन्य हूँ; मेरे चैतन्यभाव के सिवाय अन्य कोई वस्तु रंचमात्र भी मेरी नहीं है; मेरी चेतना परभाव की जन्मदाता नहीं है - ऐसा भेदज्ञान ज्ञानी को एक क्षण भी नहीं छूटता और परभाव के साथ या संयोग के साथ जरा भी एकत्व नहीं होता।

(३) तीसरा दृष्टान्त है नगरनारी के प्यार का। जैसे वेश्या का परपुरुष के प्रति प्रेम, सच्चा प्रेम नहीं है, उसे तो लक्ष्मी का प्रेम है; वैसे ही जिसने अपने चैतन्यतत्त्व को पर से अत्यन्त भिन्न अनुभव किया है - ऐसे चैतन्यदृष्टिवंत धर्मात्मा को, परवस्तु के प्रति अपनापन व प्रेम नहीं होता, उसका सच्चा प्रेम तो अपनी चैतन्यलक्ष्मी से ही है। इस दृष्टान्त से धर्मी की अन्तरदृष्टि में पर के प्रति प्रेम का अभाव दिखाया है। अपने चैतन्य के अतिरिक्त जगत् में कहीं भी पर के प्रति आत्मबुद्धि से उसे राग नहीं होता, अत: वह अलिप्त है।

इसप्रकार तीन दृष्टान्त द्वारा सम्यग्दृष्टि-धर्मात्मा का अलिप्त भाव जानना। आत्मा के सिवाय अन्यत्र कहीं भी उसका मन संतुष्ट नहीं होता, आत्मा के अतिरिक्त अन्य कोई चीज उसे प्रिय नहीं लगती, उसका सच्चा प्रेम व एकता आत्मा में ही है। पर के प्रति कुछ राग होता है, परन्तु उसमें कहीं (पर में या राग में) अंशमात्र सुखबुद्धि नहीं है। राग और स्वभाव के बीच बड़ी खाई हो गई है, अत्यन्त भिन्नता हो गई है, वह कभी एक होने वाली नहीं। राग और ज्ञान को वह जुदा ही जुदा अनुभवता है। ऐसी ज्ञानदशावंत सम्यग्दृष्टि की महिमा अपार है। जैसे श्रीफल के भीतर सफेद-मीठा गोला है, वह छिलके से जुदा है, वैसे धर्मात्मा के अन्तर में चैतन्यरस का मीठा पिण्ड है, वह रागादि परभावों से जुदा है; चैतन्यरस रागरूप नहीं होता; संयोग एवं राग से धर्मी अपने को जुदा ही देखता है। **(क्रमश:)**

नियमसार प्रवचन -

जीव का स्वरूप कैसा है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 49वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

एदे सव्वे भावा ववहारणयं पहुच्च भणिदा हु।
सव्वे सिद्धसहावा सुद्धणया संसिदी जीवा।।४९।।

(हरिगीत)

व्यवहारनय से कहे हैं ये भाव सब इस जीव के।
पर शुद्धनय से सिद्धसम हैं जीव संसारी सभी।।४९।।

ये सब भाव वास्तव में व्यवहार नय का आश्रय करके, (संसारी जीवों में विद्यमान) कहे गये हैं; शुद्धनय से संसार में रहने वाले सर्वजीव सिद्ध स्वभावी हैं।

(गतांक से आगे ...)

धर्मीजीव को विकल्पात्मक दशा में व्यवहारनय का अवलम्बन उपचार से कहा जाता है, किन्तु उसका फल संसार है।

प्रथम भूमिका में अर्थात् निर्विकल्प दशा में स्थिर न हो सके उससे प्रथम जीव को विकल्प उठते हैं और व्यवहारनय का विषय ध्यान में आता है, मुनि को भी छठे गुणस्थान में उपदेशादि का विकल्प आता है और उस विकल्प का मुनि ज्ञान करते हैं। दृष्टि में उस विकल्प और भेद का निषेध है, दृष्टि में तो अभेद स्वभाव ही है; तथापि जबतक अपने स्वभाव में ठहर नहीं सकते तबतक अस्थिरता रहती है। ऐसे चौथे, पाँचवें, छठे-गुणस्थानवाले जीवों को व्यवहारनय हस्तावलम्बरूप कहा है, तो भी उसका फल संसार है।

समयसार गाथा ११ के भावार्थ में लिखा है :-

जिनवाणी में व्यवहार का उपदेश शुद्धनय का हस्तावलम्ब जानकर बहुत किया है, परन्तु उसका फल संसार ही है; शुद्धनय का पक्ष तो कभी आया नहीं और उसका उपदेश भी विरल है - कहीं-कहीं है। इसप्रकार समयसार में भी व्यवहारनय के

आश्रय का फल संसार कहा है।

मिथ्यादृष्टि के व्यवहारनय होता नहीं, ज्ञानी के ही नय होते हैं। ज्ञानी जब आत्मा का स्वरूप अज्ञानी को गुण-गुणी भेद से समझाता है तब विकल्प वर्तता है। उसकी दृष्टि में अखण्ड स्वभाव आदरणीय है, वह राग और भेद से कल्याण नहीं मानता, उपदेश की वृत्ति उठती है, उसका भी खेद होता है। अरे रे ! हम अपने स्वभाव में ठहर नहीं सकते, इसलिए यह विकल्प आते हैं, किन्तु उनसे कभी लाभ नहीं मानते।

मिथ्यादृष्टि जीव कहता है कि प्रथम व्यवहार होता है और बाद में उससे निश्चय प्रकट होता है; परन्तु वस्तुस्वरूप ऐसा नहीं है। जिसको निश्चय प्रकट हुआ हो उसको ही व्यवहार सच्चा होता है। उस जीव को विकल्प होने पर देव-शास्त्र-गुरु पर लक्ष जाता है। उस पर्याय का ज्ञान तथा त्रिकालीद्रव्य का ज्ञान - इसप्रकार दोनों का ज्ञान होकर ज्ञान प्रमाण होता है; किन्तु किसी भी दशा में पर्याय का आश्रय करना उचित नहीं है।

'परमअध्यात्मतरंगिणी' की टीका में पं. गजाधरलालजी भी कहते हैं :-

''तथा भट्टारक शुभचन्द्रजी ने 'हंत इति वाक्यालंकारे' - ऐसा कहकर हंत अव्यय का प्रयोग वाक्य की सुन्दरता के लिए बतलाया है। परन्तु पण्डित जयचन्दजी छाबड़ा ने हंत अव्यय का अर्थ 'खेद' किया है। हम पं. जयचन्दजी के अर्थ से सहमत हैं, क्योंकि व्यवहारनय को हेय माना है। इसलिए हंत शब्द से ग्रन्थकार ने यहाँ खेद प्रकट किया है कि शुद्धस्वरूप की प्राप्ति के लिए हमें जबरन व्यवहारनय का अवलम्बन करना पड़ता है। यदि हमारा वश चलता अर्थात् बिना व्यवहार का अवलम्बन किये ही शुद्ध चिद्रूप की प्राप्ति हो जाती तो हम व्यवहारनय की ओर देखते भी नहीं।''

यहाँ हस्तावलम्बरूप कहा है अर्थात् टेकारूप कहा है। इसका अर्थ यह है कि चलने वाला स्वयं है, दूसरा जीव चलाता नहीं है। उदयादि चार भावों के आश्रय से भी लाभ नहीं है; किन्तु अपने शुद्धस्वभाव के आश्रय से ही लाभ है। ऐसे अपने अवलम्बन से जो चलते हैं, उनको अपूर्ण दशा में राग जानने योग्य है - इस कथन को हस्तावलम्बरूप कहा है। भूतार्थ स्वभाव को दृष्टि में रखते हुए अर्थात् उसका आश्रय लेते हुए पर्याय का ज्ञान करना उचित है।

जो जीव अपने शुद्धस्वभाव में ठहर गए हैं, उन्हें विकार के जानने का भी व्यवहार नहीं होता।

विकल्पवाली दशा में व्यवहार का ज्ञान कराया और शास्त्र में वहाँ भले ही

हस्तावलम्बरूप कहा तो भी जो जीव राग और विकार टालकर अपने स्वभाव में ठहर जाते हैं और निजशुद्धचैतन्यचमत्कारमात्र को देखते हैं उनको व्यवहारनय कुछ भी प्रयोजनवान नहीं है। ऐसे जीव को विकल्प होता ही नहीं है, क्षायिकभाव ऐसे प्रकट होगा - इसप्रकार का विकल्प भी वहाँ नहीं है। अपनी शुद्धता में स्थिर होते ही विकल्प टूट गया, अतः विकल्प को जाननेरूप व्यवहार भी नहीं रहता, अतः व्यवहारनय कुछ भी नहीं - ऐसा कहा है।

४९वीं गाथा की टीका पूर्ण करते हुए टीकाकार मुनिराज श्लोक कहते हैं :-

(स्वागता)

शुद्धनिश्चययेन विमुक्तौ संसृतावपि च नास्ति विशेषः।
एवमेव खलु तत्त्वविचारे शुद्धतत्त्वरसिकाः प्रवदन्ति ।।७३ ।।

(सोरठा)

अन्तर नहिं है रंच, संसारी अर सिद्ध में।
बतलाते यह मर्म, शुद्धतत्त्व के रसिकजन।।७३।।

शुद्धनिश्चयनय से मुक्ति और संसार में कोई अन्तर नहीं हैं। शुद्धतत्त्व के रसिकजन शुद्धतत्त्व की मीमांसा करते हुए ऐसा ही कहते हैं।

शुद्धनिश्चयनय से संसारी और सिद्ध में कोई अन्तर नहीं, दोनों समान हैं।

संसारी जीवों की एकसमय की पर्याय को तथा सिद्ध की मुक्ति की पर्याय को गौण करके देखें तो शुद्धनिश्चयनय से संसारी और सिद्ध में कोई भेद नहीं है। कोई ऐसा माने कि एकसमय की पर्याय सर्वथा है ही नहीं और आत्मा कूटस्थ ही है तो यह बात खोटी है। पर्याय में भेद पड़ता है, जुदा-जुदा भाव जीव करता है, निमित्त के ऊपर लक्ष भी जाता है। यह सारे भेद पर्याय में हैं अवश्य, किन्तु इन भेदों से स्वभाव को लाभ नहीं है। अतः स्वभावदृष्टि कराने के लिये कहा है कि वस्तुस्वरूप का विचार करने पर संसारी और सिद्ध में कोई अन्तर नहीं है - ऐसा शुद्धतत्त्व के रसिक पुरुष कहते हैं।

(१) शुद्धस्वभाव एकरूप है उसमें भेद नहीं है - ऐसा मानकर कोई अज्ञानी जीव कहे कि व्यवहार में भी कोई भेद नहीं है तो उसका एक भी नय सच्चा नहीं रहता। चौथे, पाँचवें, छठे गुणस्थान में जीव को सविकल्प दशा में राग होता है और निमित्त पर लक्ष जाता है - वह सब ज्ञान करने के लिए है। **(शेष पृष्ठ 17 पर ...)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : सम्यग्दृष्टि को भोग भोगते हुए भी कर्मबन्ध क्यों नहीं होता ?

उत्तर : सम्यग्दृष्टि को साता-असातारूप जितनी विषय सामग्री है, वह सब अनिष्टरूप लगती है। जैसे किसी को अशुभकर्म के उदय से रोग, शोक, दरिद्रता आदि होवे तो वह उनसे छुटकारा पाने का अथक प्रयत्न करता है; तथापि अशुभोदय के कारण छुटकारा मिलता नहीं - भोगना ही पड़ता है; उसीतरह सम्यग्दृष्टि ने पूर्व में साता-असातारूप कर्म बाँधा है और उसके उदय में अनेक प्रकार की विषय सामग्री होती है, उन सबको सम्यग्दृष्टि दु:खरूप अनुभव करता है, उन्हें छोड़ने का विशेष प्रयत्न भी करता है; किन्तु जबतक क्षपकश्रेणी नहीं चढ़े; तबतक उनका छूटना अशक्य होने से परवश होकर भोगता है; तथापि अंतरंग में अत्यन्त विरक्ति होती है। यही कारण है कि भोगसामग्री को भोगते हुए भी सम्यग्दृष्टि को कर्मबन्ध नहीं होता।

प्रश्न : ज्ञानी के भोग को भी निर्जरा का कारण बताने का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर : वहाँ भी वीतरागी दृष्टि कराने का ही प्रयोजन है, भोग के राग का पोषण कराने का नहीं। भोग के समय भी ज्ञानी की वीतरागी दृष्टि कैसी अबन्ध होती है, उस समय भी स्वभाव की श्रद्धा कैसी होती है - यह पहचान कराने का प्रयोजन है।

प्रश्न : भगवान तो परद्रव्य हैं, क्या सम्यक्त्वी भी पर की स्तुति करता है ?

उत्तर : भाई ! आपने अभी वीतराग परमात्मा के गुणों की महिमा जान नहीं पाई, इसीकारण आपको ऐसा प्रश्न उठा है। सर्वज्ञ परमात्मा के प्रति स्तुति का जैसा भाव ज्ञानी को उल्लसित होता है; वैसा अज्ञानी को कदापि नहीं होता। भले ही भगवान हैं तो परद्रव्य; परन्तु अपनी इष्ट-साध्य ऐसी जो वीतरागता और सर्वज्ञता जहाँ भगवान में देखता है, वहाँ उन गुणों के प्रति बहुमान से धर्मी का हृदय उल्लसित हुए बिना नहीं रहता। वीतरागता का जिसे प्रेम है, वह वीतराग सर्वज्ञ परमात्मा को देखते ही भक्ति में निमग्न हो जाता है। भले ही भक्ति के समय शुभराग है; परन्तु उसमें बहुमान तो वीतराग स्वभाव का ही प्रवाहित हो रहा है। इसी का नाम वीतराग भक्ति है।

प्रश्न : सम्यग्दृष्टि परद्रव्य से भिन्न अपने राग को दु:खरूप जानता है; तथापि उसको लड़ाई, व्यापार, विवाहादि का तीव्रराग क्यों होता है ?

उत्तर : सम्यग्दर्शन होने पर भी अभी अस्थिरता का राग है। परद्रव्य की क्रिया तो परद्रव्य के कारण होती है। अशुभराग आता है; किन्तु अनन्तानुबन्धी का राग नहीं होता। अन्दर तो शुभाशुभ राग से विरक्त है।

प्रश्न : सम्यग्दृष्टि को अशुभराग में अगले भव संबंधी आयु बंधती है क्या ?

उत्तर : सम्यग्दृष्टि को अशुभराग आता तो है; परन्तु अशुभ के काल में आयु का बंध नहीं होता; क्योंकि सम्यग्दृष्टि को वैमानिक देव में जाना है; इसलिये शुभराग के काल में ही आयुष्य बंधती है।

प्रश्न : भरतजी ने बाहुबलीजी के ऊपर क्रोध से चक्र छोड़ा तब भी क्या उनके अन्दर उत्तमक्षमा थी ?

उत्तर : हाँ, भरतजी ने यद्यपि क्रोधावेश में बाहुबलीजी के ऊपर चक्र प्रहार किया था; तथापि उस समय भी भरतजी के अन्दर उत्तमक्षमा विद्यमान थी; क्योंकि उनके अन्दर अनन्तानुबन्ध करने वाले मिथ्यात्व का अभाव था। इसके विपरीत बाह्य से द्रव्यलिंगधारी मुनि हो और कोई वैरी आदि आकर शरीर के खण्ड-खण्ड करे; तथापि बाह्य से क्रोध न करे, तो भी उसके अन्दर में अनन्तानुबंध करने वाले मिथ्यात्व का सद्भाव होने से बाह्य में क्षमा धारण करते हुए भी उत्तमक्षमा नहीं कही जा सकती।

सुमनभाई दोशी नहीं रहे

राजकोट (गुज.) निवासी श्री सुमनभाई दोशी का 88 वर्ष की आयु में दिनांक 16 जनवरी 2014 को जिनेन्द्रभगवान के स्मरणपूर्वक देहावसान हो गया।

टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 17 जनवरी को प्रात: पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के प्रवचनोपरान्त उन्हीं की अध्यक्षता में शोक सभा का आयोजन किया गया, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल व पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने श्री सुमनभाई का परिचय दिया। अन्त में नौ बार णमोकार मंत्र का सामूहिक स्मरण करते हुए श्रद्धांजलि दी गई।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनन्य भक्तों में से एक सुमनभाईजी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में कार्यरत राजकोट, देवलाली, सोनगढ आदि अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी थे। वे पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के न केवल शुभचिंतक थे अपितु उसके द्वारा संचालित तत्त्वज्ञान की गतिविधियों का भरपूर लाभ भी लेते थे। यहाँ लगने वाले प्रत्येक शिविर में आद्योपान्त नियमित उपस्थित रहते थे। ज्ञातव्य है कि आप गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनन्य सहयोगी श्री रामजीभाई दोशी के सुपुत्र थे।

समाचार दर्शन -

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की ह्व

साहित्यिक व सांस्कृतिक प्रतियोगिताऐं सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु महाविद्यालय द्वारा दिनाँक 6 से 16 जनवरी तक विभिन्न साहित्यिक प्रतियोगितायें सम्पन्न कराई गयी।

दिनांक 6 जनवरी को श्री इन्द्रचंदजी कटारिया परिवार द्वारा प्रतियोगिताओं का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की। इस अवसर पर पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, श्री ताराचंदजी सोगानी, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, पण्डित गोमटेशजी शास्त्री एवं श्रीमती कमला भारिल्ल उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 6 जनवरी को **छंदपाठ प्रतियोगिता** में जिनेश सेठ प्रथम व ऋषभ जैन द्वितीय स्थान पर रहे। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी (बिड़ला स्कूल) थे। निर्णायक के रूप में पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा व श्री शिखरचंदजी शास्त्री उपस्थित थे। प्रतियोगिता का संचालन जिनकुमार जैन एवं पंकज जैन ने किया।

दिनांक 7 जनवरी को रात्रि में **भाषण प्रतियोगिता (उपाध्याय वर्ग)** के अन्तर्गत जिनेन्द्र जैन ने प्रथम स्थान एवं चर्चित जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ ने की। निर्णायक के रूप में पण्डित सोनूजी शास्त्री व पण्डित अनिलजी शास्त्री थे। संचालन कुलभूषण जैन एवं प्रवीण जैन ने किया।

दिनांक 8 जनवरी को रात्रि में **भजन प्रतियोगिता** के अन्तर्गत अमोल महाजन ने प्रथम व रिमांशु जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री प्रकाशचंदजी जैन ने की। निर्णायक वंदनाजी भौंच व अर्चनाजी पाटनी थे। संचालन साकेत जैन ने किया।

दिनांक 9 जनवरी को **उपाध्याय वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में** पारस जैन ने प्रथम एवं ऋषभ जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अध्यक्षता श्रीमती कमला भारिल्ल ने की। निर्णायक पण्डित संजयजी सेठी एवं पण्डित परेशजी शास्त्री थे। संचालन भूषण जैन एवं अंकुर जैन ने किया।

दिनांक 10 जनवरी को रात्रि में **भाषण प्रतियोगिता (शास्त्री वर्ग)** में अच्युतकांत जैन ने प्रथम स्थान एवं अनुभूति जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. प्रकाशजी पाण्डेय (प्राचार्य-राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान) ने की। निर्णायक के रूप में पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल व पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील थे। संचालन निलय जैन एवं समर्पण जैन ने किया।

दिनांक 11 जनवरी को **अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान अच्युतकांत जैन एवं द्वितीय स्थान ऋषभ जैन ने प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. ए.एल. शाह एवं निर्णायक के रूप में श्रीमती रुचि शर्मा एवं श्रीमती गुन्जा पाटनी उपस्थित थे। संचालन नील हरिया व प्रीतिंकर जैन ने किया।

दिनांक 12 जनवरी को **अंत्याक्षरी प्रतियोगिता** के अन्तर्गत सचिन जैन व शुभम जैन प्रथम

तथा मयूर जैन व विशाल जैन द्वितीय स्थान पर रहे। निर्णायक श्रीमती समता जैन, पण्डित रजित शास्त्री एवं पण्डित सोनूजी शास्त्री थे। संचालन साकेत जैन एवं प्रीतिंकर जैन ने किया।

दिनांक 13 जनवरी को **संस्कृत संभाषण प्रतियोगिता** में अच्युतकांत जैन ने प्रथम एवं ऋषभ जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. श्रीयांसजी सिंघई ने की। निर्णायक पण्डित शांतिकुमारजी पाटील व श्री ललितकुमारजी थे। संचालन साकेत जैन ने किया।

दिनांक 14 जनवरी को दोपहर में **चित्रकला प्रतियोगिता** के अन्तर्गत कीर्तिकुमार मगदुम व गणेश वायकोस ने प्रथम एवं अमन जैन व सौरभ जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक के रूप में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील व पण्डित सोनूजी शास्त्री थे। संचालन साकेत जैन, सचिन जैन व सुमतिनाथ ने किया।

दिनांक 14 जनवरी को दोपहर में **निबन्ध प्रतियोगिता** के अन्तर्गत सचिन जैन ने प्रथम एवं मनीष जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक के रूप में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित पीयूषजी शास्त्री व पण्डित सोनूजी शास्त्री थे। संचालन साकेत जैन, सचिन जैन व सुमतिनाथ ने किया।

दिनांक 14 जनवरी को रात्रि में **शास्त्री वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता** में जिनेश सेठ ने प्रथम, साकेत जैन भिण्ड ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. दीपकजी वैद्य ने की तथा निर्णायक के रूप में पण्डित पीयूषजी शास्त्री व पण्डित मनीषजी कहान उपस्थित थे। संचालन सुमतिनाथ जैन व अभिजीत जैन ने किया।

दिनांक 15 जनवरी को रात्रि में **काव्यपाठ प्रतियोगिता** के अन्तर्गत सचिन जैन ने प्रथम एवं मयूर जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने की। निर्णायक के रूप में पण्डित संजीवजी शास्त्री व पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री थे। संचालन साकेत जैन व सचिन जैन ने किया।

दिनांक 16 जनवरी को **आध्यात्मिक क्रिकेट प्रतियोगिता** के अन्तर्गत अरिहंत टीम ने प्रथम एवं सिद्ध टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित परमात्म प्रकाशजी भारिल्ल ने की। निर्णायक के रूप में पण्डित सोनूजी शास्त्री व पण्डित गोमटेश्वरजी चौगुले थे। संचालन विवेक जैन व सचिन जैन ने किया।

इन प्रतियोगिताओं के साथ-साथ कबड्डी, बैडमिंटन, कैरम, शतरंज, स्लो साइकिल, वॉलीबाल आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ। खेल प्रतियोगिताओं का उद्घाटन श्री सुरेन्द्रजी बज जयपुर द्वारा हुआ। सभी प्रतियोगिताओं का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष ने किया।

मासिक विचार गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ सिद्धार्थ नगर स्थित श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में राजस्थान जैन साहित्य परिषद् जयपुर द्वारा दिनांक 21 दिसम्बर 2013 को 51वीं मासिक विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका विषय था - **'वर्तमान में जैनत्व के अस्तित्व के लिये चुनौती - समस्या और समाधान'**। मुख्य वक्ता पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा इस विषय पर प्रकाश डालते हुए बालकों में संस्कारों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम के संयोजक श्री एस.एल. गंगवाल थे। **- महेशचंद जैन चांदवाड़**

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद संपन्न

जबेरा-दमोह (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीर स्वामी कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल जबेरा के तत्त्वावधान में आयोजित श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव शनिवार, दिनाँक 14 दिसम्बर से गुरूवार 19 दिसम्बर तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड इत्यादि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली ने सह-प्रतिष्ठाचार्य ब्र.नन्हे भैया सागर, ब्र.सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पण्डित सुबोधजी शाहगढ, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी, पण्डित रमेशजी गायक, पण्डित मनोजजी जैन जबलपुर, ब्र. श्रेणिकजी जैन जबलपुर, पण्डित संदीपजी शास्त्री जबलपुर, मंगलार्थी अकलंक जैन आदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई गई।

बालक नेमिकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती राजकुमारी-सनतकुमार जैन को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री संजय-सपना सिंघई थे। सिंहद्वार व प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट ज्ञानोदय भोपाल के सदस्यों द्वारा किया गया।

महोत्सव का ध्वजारोहण श्री उदयकुमार चौधरी परिवार जबेरा ने किया। स्वाध्याय भवन का उद्घाटन सेठ गुलाबचंदजी जैन सागर एवं जिनमंदिर का उद्घाटन श्री कमलकुमारजी जैन जबलपुर द्वारा किया गया। महोत्सव के विशिष्ट कार्यक्रमों के अन्तर्गत अनन्तमती बालिका मण्डल जबेरा द्वारा अकलंक-निकलंक के जीवन पर आधारित 'बलिदान' नाटिका का आयोजन हुआ। दिनांक 17 दिसम्बर को तप कल्याणक के दिन प्रथम आहार दान श्री विमलकुमारजी जैन (नीरू केमिकल्स) परिवार दिल्ली द्वारा दिया गया। रात्रि में बालिका मण्डल द्वारा 'जम्बूस्वामी का वैराग्य' नामक नाटिका का बहुत सुन्दर मंचन किया गया।

इस महोत्सव में महावीर भगवान की 41 इंची, सीमंधर भगवान एवं शान्तिनाथ भगवान की 37 इंची पाषाण प्रतिमाओं के अतिरिक्त वासुपूज्य भगवान, पार्श्वनाथ भगवान विधिनायक नेमिनाथ भगवान एवं मल्लिनाथ भगवान की धातु की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई।

महोत्सव के सभी कार्यक्रम श्री रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर एवं श्री अशोकजी जैन जबलपुर के निर्देशन में सम्पन्न हुये। **– विराग शास्त्री**

धर्मपरीक्षा ग्रंथ उपलब्ध

आचार्य अमितगति द्वारा रचित ग्रंथ 'धर्मपरीक्षा' का प्रकाशन श्री कुन्दकुन्द कहान मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा द्वारा किया गया है, जिसका मूल्य 50/- रुपये है। प्राप्ति हेतु संपर्क करें - **रतनचंद चौधरी कोटा, 8104597337**

गोष्ठियाँ सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : (1) यहाँ टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा होने वाली गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 8 दिसम्बर को **'जैन न्याय : एक संक्षिप्त रूपरेखा'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में पारस जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं राहुल जैन (शास्त्री अन्तिम वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण प्रशांत जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के निलय जैन व प्रवीण जैन ने किया।

(2) दिनांक 22 दिसम्बर 2013 को **'लघु समयसार : छहढाला'** विषय पर उपाध्याय वर्ग हेतु एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित नीतेश शास्त्री जयपुर ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में श्रेयांस जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं नमन जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण अभय जैन खड़ैरी (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के रूपेन्द्र जैन व प्रीतिंकर जैन ने किया।

(3) दिनांक 25 दिसम्बर को **'चार अनुयोग : एक अनुशीलन'** विषय पर उपाध्याय वर्ग हेतु एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अनुभव जैन भिण्ड (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं जिनेन्द्र जैन बमनौरा (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण अमन जैन दिल्ली (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष की कुमारी ईर्या जैन दिल्ली व साकेत जैन जयपुर ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री ने किया।

(4) दिनांक 28 दिसम्बर 2013 को **'पंचभाव : एक अनुशीलन'** विषय पर उपाध्याय वर्ग हेतु एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता ब्र. विमलाबेन जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में ऋषभ जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं सिद्धार्थ जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण सागर पाटील (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के नील हरिया व प्रीतिंकर जैन ने किया।

(5) दिनांक 29 दिसम्बर 2013 को **'ज्ञानी श्रावक की ग्यारह प्रतिमाएं'** विषय पर उपाध्याय वर्ग हेतु एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित मनीषजी कहान खड़ैरी ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अभय जैन खड़ैरी (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं अमित जैन शाहगढ (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण सर्वेश जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के कुलभूषण अम्बेकर एवं शुभम जैन ने किया।

(6) दिनांक 4 जनवरी 2014 को **'गुणस्थान विवेचन'** विषय पर शास्त्री वर्ग हेतु एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता ब्र. यशपालजी जैन जयपुर ने की।

निर्णायक के रूप में पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर उपस्थित रहे। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में शुभम जैन उभेगांव (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं शुभम मोदी (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण सौरभ जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के आशु जैन एवं निलय जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री ने किया।

(7) दिनांक 5 जनवरी 2014 को **'पंच लब्धि - एक चिंतन'** विषय पर शास्त्री वर्ग हेतु एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. नेमिनाथजी शास्त्री कुम्भोज बाहुबली ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सुमित जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं अरविन्द जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण विकेश जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अंकुर जैन एवं नीशू जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

(8) दिनांक 11 जनवरी 2014 को **'क्रिया-परिणाम-अभिप्राय'** विषय पर शास्त्री वर्ग हेतु एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित अरुणजी बण्ड ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अनुभव जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं अच्युतकांत जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण अमोल जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के सचिन जैन एवं विवेक जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

(9) दिनांक 12 जनवरी 2014 को **'तत्त्वार्थमणिप्रदीप : एक अनुशीलन'** विषय पर शास्त्री वर्ग हेतु एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में जिनेश जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं साकेत जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण दीपक जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के प्रीतिंकर जैन एवं सचिन जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

आध्यात्मिक युवा चेतना शिविर संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ रामपुरा स्थित श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में दिनांक 13 से 18 दिसम्बर तक छ: दिवसीय आध्यात्मिक युवा चेतना शिविर संपन्न हुआ।

विशेष रूप से युवा वर्ग के लिये आयोजित इस शिविर में ब्र. सुमतप्रकाशजी के प्रात:काल प्रवचनसार पर एवं सायंकाल आज की जीवन शैली में युवा वर्ग को आध्यात्मिक एवं नैतिक संस्कारों से सुसज्जित किये जाने वाले प्रेरणास्पद प्रवचनों का लाभ मिला।

इस शिविर में एक दिन पंचपरमेष्ठी विधान का भी आयोजन किया गया। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा द्वारा संपन्न कराये गये।

कार्यक्रम का संयोजन पण्डित चिन्मयजी शास्त्री कोटा द्वारा किया गया।

अष्टम वार्षिकोत्सव सानंद संपन्न

कोलकाता : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मंदिर पद्मपुकर में दिनांक 31 दिसम्बर 2013 व 1 जनवरी 2014 को श्री महावीर पंचकल्याणक का अष्टम वार्षिकोत्सव अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर द्वारा प्रात: समयसार एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। कार्यक्रम में स्वयंभूस्तोत्र विधान का आयोजन किया गया, जिसके आयोजनकर्त्ता श्री अनिलजी सुभाषजी सुशीलजी सेठी परिवार कोलकाता थे। इस अवसर पर भव्य दिव्यध्वनि वाचनालय का उद्घाटन श्री दिलीपजी सेठी परिवार कोलकाता ने किया। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर द्वारा संपन्न हुये।

वेदी प्रतिष्ठा संपन्न

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ बड़ा फुहारा स्थित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर में दिनांक 20 दिसम्बर को वेदी प्रतिष्ठा सानंद संपन्न हुई।

इस अवसर पर प्रात:काल शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें जबलपुर के अतिरिक्त आसपास के नगरों के अनेक साधर्मीजन सम्मिलित हुये। इसके पश्चात् जिनमंदिर में शान्तिविधान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में श्री निर्मलकुमार जितेन्द्रकुमार जैन परिवार द्वारा 11 इंची भगवान आदिनाथ की धातु की प्रतिमा, श्री नेमीचंद सुनीलकुमारजी जैन पायलवाला परिवार द्वारा भगवान शान्तिनाथ की प्रतिमा एवं वीतराग विज्ञान मण्डल के सभी सदस्यों की ओर से श्री सीमंधर भगवान की प्रतिमा विराजमान की गई। सभी प्रतिमायें जबेरा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव से प्रतिष्ठित होकर आई थीं।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के उद्बोधन का विशेष लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. मनोजजी जैन, ब्र. श्रेणिकजी जैन द्वारा संपन्न कराये गये। कार्यक्रम का संचालन पण्डित विरागजी शास्त्री ने किया। **- अशोक जैन**

आध्यात्मिक शिविर एवं वार्षिकोत्सव संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ कावाखेड़ा शास्त्री नगर स्थित सीमंधर जिनालय का प्रथम वार्षिक महोत्सव एवं आध्यात्मिक शिविर का आयोजन दिनांक 20 से 22 दिसम्बर 2013 तक किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्री महाचंदजी सेठी थे। कार्यक्रम में श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया, जिसके आयोजनकर्त्ता श्री शांतिलालजी चौधरी परिवार भीलवाड़ा थे। ध्वजारोहण श्री नेमीचंदजी बघेरवाल ने किया।विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन ने संपन्न कराये।

(आगामी कार्यक्रम...)

तीर्थधाम सिद्धायतन का दशाब्दी समारोह

तीर्थधाम सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, द्रोणगिरि द्वारा सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि में स्थापित संकुल **तीर्थधाम सिद्धायतन के दशवर्ष पूर्ण होने के अवसर पर ट्रस्ट द्वारा 21 से 23 फरवरी 2014 तक 'दशाब्दी समारोह' का आयोजन अत्यंत विशाल स्तर पर धूमधाम से होने जा रहा है।** इस अवसर पर 'अथ से अब तक...' एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है। आप सभी साधर्मी भाई-बहिनों को इस कार्यक्रम में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है। **- समस्त ट्रस्टीगण**

वनिता बोधिनी शिविर संपन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट व अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा देवनगर द्वारा ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' की प्रेरणा से दिनांक 3 से 9 जनवरी 2014 तक वनिता बोधिनी शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. दीप्ती बहन खनियांधाना एवं ब्र. अंतिमा बहन सिंगोडी द्वारा तीनों समय विभिन्न कक्षायें चलाई गई। इसके अतिरिक्त पूजन, भक्ति व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। दिनांक 8 जनवरी को परीक्षायें हुई, जिसमें 63 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

दिनांक 9 जनवरी को शिविर समापन के अवसर पर ब्र. रवीन्द्रजी का विशेष उद्बोधन हुआ। साथ ही पुरस्कार वितरण समारोह भी आयोजित किया गया।

शिविर में महेन्द्रजी शास्त्री, आशीषजी शास्त्री, श्री सुरेशजी जैन, श्री पुष्पेन्द्रजी जैन, श्री सचिनजी जैन, श्री विवेकजी जैन आदि फैडरेशन के अनेक सदस्य उपस्थित थे।

छात्रों के लिये अपूर्व अवसर

सोनगढ (गुज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा संचालित श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थीगृह में इस वर्ष कक्षा 6 (अंग्रेजी एवं गुजराती दोनों माध्यम) में तथा कक्षा 7 व 8 (गुजराती माध्यम) में प्रवेश दिया जा रहा है।

छात्रों के आवास, भोजन, चिकित्सा एवं लौकिक शिक्षण की सम्पूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क है। जो छात्र यहाँ रहकर तत्त्वज्ञान के संस्कार प्राप्त करना चाहते हों वे आवेदन पत्र मंगाकर 25 मार्च तक भरकर अवश्य भेज दें। ध्यान रहे पूर्व कक्षा में 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त छात्र का आवेदनपत्र स्वीकार नहीं किया जायेगा।

आवेदन पत्र www.vitragvani.com पर भी उपलब्ध है। **संपर्क सूत्र :** कामना जैन (प्राचार्या), श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन विद्यार्थीगृह राजकोट-भावनगर हाइवे रोड़, ग्राम पंचायत के पास, सोनगढ-364250 भावनगर (गुज.) फोन - (02846)-244510

डॉ. दीपक जैन को वैद्यरत्न की उपाधि

टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक विद्वान वैद्य दीपकजी जैन जयपुर को श्री दिगम्बर जैन समाज बापूनगर सम्भाग द्वारा उनके आयुर्वेद चिकित्सा क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान एवं उनके द्वारा लिखित पुस्तकें - 'स्वास्थ्य के अहिंसक नुस्खे' एवं 'अहिंसक आहार : स्वास्थ्य का आधार' के उपलक्ष्य में दिनांक 5 जनवरी 2014 को 'वैद्यरत्न' उपाधि से अलंकृत किया गया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

हिंगोली (महा.) : यहाँ महावीर भवन में स्वर्गीय पण्डित पद्मकररावजी दोंडल की स्मृति में श्री प्रदीपजी दोंडल व श्री अभयकुमारजी यंबल परिवार द्वारा दिनांक 30 दिसम्बर 2013 से 5 जनवरी 2014 तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं चौबीस तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रात: प्रवचनसार एवं रात्रि में विभिन्न विषयों पर तथा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में क्रिया-परिणाम-अभिप्राय विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त प्रात: व दोपहर को ब्र. वासंतीबेन एवं ब्र. प्रतीतिबेन की कक्षाओं का भी आयोजन हुआ।

इस शिविर में मुम्बई, औरंगाबाद, वाशिम, अकोला, इन्दौर, छिन्दवाड़ा इत्यादि नगरों के लगभग 200 साधर्मियों सहित 700-800 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

आदर्श शिक्षण शिविर संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ हिरणमगरी-सेक्टर 11 स्थित श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जिन मंदिर प्रांगण में श्री जिनसिद्धांत प्रसारक वर्ग के तत्त्वावधान में पाँचवाँ शिक्षण शिविर दिनांक 21 दिसम्बर से 29 दिसम्बर 2013 तक आयोजित किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा दोनों समय चार अभाव, नय-निक्षेप, हेय-उपादेय आदि विषयों पर प्रवचनों के अतिरिक्त स्थानीय विद्वान पण्डित राजकुमारजी शास्त्री द्वारा 'आठ कर्मों के आस्रव के कारण', डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री द्वारा 'श्रावक के अष्टमूल गुण', पण्डित खेमचंदजी शास्त्री द्वारा 'हमारी जीवन शैली' एवं पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री द्वारा 'जैनदर्शन के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति-विकास' पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित जगदीशसिंहजी पंवार उज्जैन, पण्डित भोगीलालजी जैन उदयपुर व पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर के भी व्याख्यान हुये।

इस शिविर में लगभग 700 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। शिविर का संचालन पण्डित खेमचंदजी शास्त्री ने व आभार प्रदर्शन श्री संदीपजी मेहता ने किया।

पद्मनंदी-पंचविंशतिका ग्रन्थ उपलब्ध

आचार्य पद्मनन्दी विरचित **पद्मनन्दी पंचविंशतिका** शास्त्र का प्रकाशन श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट, नागपुर द्वारा किया गया है। इसमें धर्मोपदेशामृत, दानोपदेश, अनित्य पंचाशत् आदि विषयों का वर्णन है। इसकी सहयोग राशि 50/- है। ग्रन्थ प्राप्ति हेतु 07588740963 पर सम्पर्क कर सकते हैं। **- अशोककुमार जैन, मन्त्री**

प्रतियोगिताएं संपन्न

मुम्बई : सर्वोदय संस्कार यूथ फाउन्डेशन एवं दिगम्बर जैन समाज मुम्बई के सहयोग से द्वितीय बार दादर माटुंगा सांस्कृतिक केन्द्र में मुम्बई की सभी पाठशालाओं के मध्य विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें मुम्बई की 13 पाठशालाओं के 174 प्रतियोगियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर वाद-विवाद, प्रश्नमंच, भजन, चित्रकला, प्रोजेक्ट बनाओ आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया एवं पुरस्कार के रूप में स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक प्रदान किये गये। सभी पाठशालाओं में सीमंधर जिनालय व कांदीवली चारकोप की पाठशाला ने सर्वाधिक पदक जीतकर प्रथम स्थान के साथ **बेस्ट पाठशाला ऑफ मुम्बई 2013-2014** चुनी गई।

इस प्रतियोगिता में मुम्बई के समस्त शास्त्री विद्वानों ने परीक्षक एवं मार्गदर्शक के रूप में अपना सहयोग प्रदान किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सीमंधर जिनालय समाज का अभूतपूर्व योगदान रहा। इस प्रतियोगिता की संकल्पना पण्डित अक्षयजी शास्त्री ने की। प्रतियोगिता को सफल बनाने में पण्डित किशोरजी शास्त्री, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री एवं पण्डित देवांगजी गाला ने एवं दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल से श्री कांतिभाई मोटानी, श्री राजूभाई मोदी, श्री विजयभाई हाथरस, श्री रमेशभाई बोरिचा आदि महानुभावों का सक्रिय सहयोग रहा।

मुम्बई में कहीं पर भी पाठशाला चलाने के इच्छुक व इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के इच्छुक व्यक्ति पण्डित देवांग गाला शास्त्री (मोबा. 9967424231) से संपर्क कर सकते हैं।

शोक समाचार

(1) उदयपुर (राज.) निवासी श्री कस्तूरचन्दजी सिंघवी का 83 वर्ष की आयु में दिनांक 31 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक के ध्रुवफण्ड हेतु 11 हजार रुपये प्राप्त हुये।

(2) अलवर (राज.) निवासी श्रीमती शान्तिदेवी जैन धर्मपत्नी श्री नेमीचन्दजी जैन का दिनांक 18 दिसम्बर को पंचपरमेष्ठी के स्मरणपूर्वक शांतपरिणामों से देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) मोंधा-सेलू (महा.) निवासी श्रीमती कमलाबाई इंदरचंदजी बिनायके का दिनांक 2 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में ट्रस्ट हेतु 5000/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।